प्रैस विज्ञप्ति

हिन्द महासागर के किनारों पर बसे देशों के बीच समुद्री व्यापार एवं सांस्कृतिक संबंधों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन मार्च 2015 में भुवनेश्वर में होगा

भारत सरकार के आठ मंत्रालय और 20 राष्ट्रों के प्रतिनिधि इस आयोजन में शिरकत करेंगे

नई दिल्ली / भुवनेश्वर / कोलकाता, 23 फरवरी 2015: अपनी किस्म के पहले आयोजन में हिन्द महासागर के किनारे के देशों का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 20 से 22 मार्च 2015 तक भुवनेश्वर, ओडिशा में होने जा रहा है; इस सम्मेलन का शीर्षक है **''भारत और हिन्द महासागरः समुद्री व्यापार तथा सांस्कृतिक संबंधों का नवीकरण''**। इस क्षेत्र के 20 देश – जो इंडियन ओशियन रिम कंट्रीज़ के नाम से जाने जाते हैं – इस तीन दिवसीय सम्मेलन में शिरकत करेंगे जहां व्यापार, समुद्री सुरक्षा और सांस्कृति संबंधों पर चर्चाएं की जाएंगी। इस सम्मेलन को भारत सरकार के 8 अहम मंत्रालयों का समर्थन हासिल होगा जो हैं विदेश मंत्रालय, पैट्रोलियम व प्राकृतिक गैस, विद्युत, जहाजरानी, वाणिज्य व उद्योग, संस्कृति, पर्यटन और कृषि। उम्मीद है कि यह एक अभूतपूर्व कार्यक्रम होगा जिसमें सहभागी देश विचारों व अनुभवों का आदान–प्रदान एवं अर्थपूर्ण विचार–विमर्श करेंगे।

विदेशी मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज बतौर मुख्य अतिथि इस सम्मेलन का उद्घाटन करेंगी। पैट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान विशिष्ट अतिथि होंगे। एनएसए के प्रमुख श्री अजित डोभाल भी विशिष्ट अतिथि होंगे और इंडियन ओशियन रिम ऐसोसिएशन के महासचिव व राजनयिक श्री वीके भगीरथ वक्ता के तौर पर इस आयोजन में शामिल होंगे और अपने विचारों व जानकारी को साझा करेंगे। रक्षा मंत्री श्री मनोहर पार्रिकर अंतिम दिन समापन सत्र में मुख्य अतिथि रहेंगे।

इस सम्मेलन का आयोजन सामाजिक व सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान (ISCS) द्वारा विकासशील देशों हेतु अनुसंधान व सूचना प्रणाली (RIS) के सहयोग से किया जा रहा है। इस तीन दिवसीय सम्मेलन में क्षेत्र में व्यापार, समुद्री सुरक्षा व सांस्कृतिक संबंधों के महत्वपूर्ण पहलुओं पर समानांतर सत्र और गंभीर चर्चाएं होंगी।

इस आयोजन के बारे में सामाजिक व सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान के सचिव श्री अरिंदम मुखर्जी ने कहा, ''हिन्द महासागर अनूठा है, इसलिए नहीं कि यह एकमात्र महासागर है जिसका नाम एक देश के नाम पर पड़ा है बल्कि इसलिए भी पिछले 7,500 वर्षों से यह पश्चिमी, उत्तरी व दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के लिए मिलने की जगह रहा है तथा यह पश्चिमी जगत के लिए कई अर्थव्यवस्थाओं तक पहुंचने का प्रवेशद्वार रहा है। हिन्द महासागर के देशों के बीच सामरिक प्रासंगिता के साथ–साथ सामाजिक–सांस्कृतिक समानताएं भी हैं जो कि इस क्षेत्र में टिकाऊ आर्थिक व व्यापारिक रिश्तों को पोषित करने की कुंजी हैं। यह सम्मेलन विचारों के आदान–प्रदान के लिए एक मंच मुहैया कराएगा और इस प्रकार वर्तमान भौगोलिक–राजनीतिक विकास व संबंधों की पृष्ठभूमि में जुड़ाव के कॉन्सेप्ट में नई जान फूंकनी होगी।''

''यह सम्मेलन ऐतिहासिक, आर्थिक, भू–राजनैतिक, सांस्कृतिक, ऊर्जा सुरक्षा, धर्म, साहित्य, व्यापार, प्रवासन, प्रसार आदि सभी पहलुओं व दृष्टिकोणों से हिन्द महासागर के अध्ययन व विश्लेषण का बहुमूल्य अवसर प्रदान करेगा तथा इस क्षेत्र के देशों को जोड़ने वाली कड़ियों को नवजीवन देगा,'' उन्होंने आगे कहा।

Institute of Social and Cultural Studies
INDIA

RIS
Research and Information System for Developing Countries

ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, बांग्लादेश, मालदीव, थाईलैंड, मॉरिशस, इंडोनेशिया, मलेशिया, कीनिया, तंजानिया, मोजाम्बिक, म्यांमार, मैडागास्कर, सिंगापुर, यमन, ओमान, ईरान, यूएई आदि समेत 20 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों के इस सम्मेलन में भाग लेने की उम्मीद है।

सम्मेलन के सहयोगियों में शामिल हैं: इंडियन ओशियन रिम ऐसोसिएशन; ऐक्सपी डिविज़न, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार; अंतर्राष्ट्रीय संबंध व समन्वय विभाग, दक्षिण अफ्रीका; कीनिया नैशनल चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री; ओडिशा इंस्टीट्यूट ऑफ मैरिटाईम एंड साउथ ईस्ट एशियन स्टडीज़ और राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड।

प्रमुख झलकियां

सम्मेलन के उद्घाटन के मौके पर एक जानकारीपरक सत्र के अलावा **हिन्द महासागर में जहाज़रानी की विरासत** पर एक प्रदर्शनी भी होगी जिसमें इस क्षेत्र की विस्तृत विरासत, अंतः संबंध, विचारधाराओं में तालमेल, सांस्कृतिक समानताएं दर्शाई जाएंगी और साथ में भव्य अतीत के विभिन्न प्रतीक व अवशेष भी प्रदर्शित किए जाएंगे जैसे सोकोट्रा, बंगाल में टेराकोटा कला, भारत की नावें, पेपिरस पर लिखा ऋण अनुबंध, रामायण की परम्परा, दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में बौद्ध धर्म, बाली–आकर्षण की भूमि, दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय कला की छाप, कम्बोडिया के मंदिर व देवता; इंडोनेशिया, वियतनाम व अन्य देशों की भारतीय कड़ियां।

इस अवसर पर **'हिन्द महासागर और राजेन्द्र चोला प्रथम'** पर एक डाक टिकट भी जारी की जाएगी जो गौरवपूर्ण अतीत के सम्मान स्वरूप है।

सामाजिक व सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान (ISCS) के बारे में

सामाजिक व सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान विभिन्न सामाजिक व सांस्कृतिक मुद्दों पर अनुसंधान व शैक्षिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने वाला संगठन है। यह शिक्षाविदों, विद्यार्थियों, अनुसंधानकर्ताओं और कार्यकर्ताओं के साथ ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अभिरुचियों पर काम करता आ रहा है। इसके उद्देश्य हैं: राष्ट्रीय व सामाजिक एकता के साथ अंतर्राष्ट्रीय समझ को प्रोत्साहित करना, राष्ट्रीय विरासत (अमूर्त घटकों समेत) का संरक्षण व दस्तावेज़ीकरण; जन नीतियों के अध्ययन और समाज पर उनके प्रभाव को जानने के लिए सम्मेलनों, कार्यशालाओं, सेमिनारों, अध्ययन समूहों का आयोजन करना तथा इन उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए अनुसंधान हेतु फैलोशिप देना व पत्रिकाएं, किताबें आदि प्रकाशित करना।

विकासशील देशों हेतु अनुसंधान व सूचना प्रणाली (RIS) के बारे में

विकासशील देशों हेतु अनुसंधान व सूचना प्रणाली नई दिल्ली स्थित एक स्वायत्त थिंक–टैंक है जो भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के अंतर्गत आता है। यह संगठन अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों व विकास सहयोग पर नीति शोध में विशेषज्ञता रखता है। RIS का गठन एक ऐसे मंच के तौर पर किया गया है जो अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर विकासशील देशों के बीच प्रभावी नीति संवाद एवं क्षमता निर्माण को बढ़ावा दे। RIS का कार्य दक्षिणी देशों में समन्वय को बढ़ावा देना और विकासशील देशों को विविध मंचों पर बहुपक्षीय वार्ताओं में मदद देना है। RIS कई क्षेत्रीय गतिविधियों के ट्रैक–2 प्रोसैस में लगा हुआ है। सहयोग राष्ट्रों के साथ व्यापक आर्थिक सहयोग अनुबंधों को पूरा करने की वार्ताओं में RIS भारत सरकार को विश्लेषणात्मक सहयोग दे रहा है। नीतिगत थिंक टैंक के अपने गहन नैटवर्क के माध्यम से RIS अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर नीतिगत सुसंगता को मजबूती देने के लिए प्रयासरत है।

–0–0–0–